JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue

JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)

An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"श्री अनंगहर्ष मातृराज का साहित्यिक योगदान"

दीपा कुशवाहा
शोध छात्रा (संस्कृत विभाग)
डॉ० भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा
ई–मेल– kushwahadeepa722@gmail.com
मो०– 8707076998

भारतीय साहित्य परम्परा को जिन ग्रन्थों ने सर्वाधिक प्रभावित किया तथा बद्धिजीवियों एवं कलाकारों के लिए अजस्त्र प्रेरणास्रोत सिद्ध हुए है, वह **रामायण, महाभारत** एवं **वृहत्कथा** है।

सर्वाधिक संस्कृत विधाओं का प्रादुर्भाव इन्हीं तीनों ग्रन्थों को आधार बनाकर हुआ है। इन तीनों ग्रन्थों को समानान्तर नूतन साहित्य सृजन के आधार स्तम्भ एवं उपजीव्य काव्य का गौरव समर्पित है। गुणाढ्य की मूल वृहत्कथा यद्यपि दुर्भाग्यवश काल कवलित हो गई परन्तु पूर्णतः नष्ट होने से पूर्व सम्पूर्ण भारतवर्ष को अत्यधिक प्रभावित कर चुकी थी जिसका मूल कलेवर काल के कराल गाल में समाने के उपरान्त भी उसकी आत्मा एवं उसकी प्रेरणा सर्वथा सिद्ध व अक्षुण्ण बनी रही। भारतीय साहित्य को प्रदान अनेकों रचनाओं में से एक अमूल्य देन **उदयन कथा** भी है जिसकी प्रसिद्धि एवं ख्याति भी सर्वाधिक है।

उदयन कथा का अविच्छिन्न स्वरुप हमें प्रायः **संस्कृत** से लेकर **पाली, प्राकृत एवं अपभ्रंश** तक प्राप्त होता है। **काव्य, कथा, नाटक. नाटिका, आख्यायिका, धर्मग्रन्थ, पुराण** इत्यादि काव्य की सभी विधाओं में **उदयन कथा** को उचित स्थान प्राप्त हुआ है। अब तक के उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर कहा जा सकता है कि संस्कृत साहित्य में सर्वप्रथम **महाकवि भास** ने उदयन कथा को अपने दो प्रमुख नाटकों का आधार बनाकर सभी के समक्ष लाने का महत्वपूर्ण कार्य किया था। महाकवि कालिदास के समय में भी इस कथा की उपलब्धि के प्रमाण प्राप्त होते है। कालिदास विरचित **मेघदूतम्**[1] की एक पंक्ति इसका उदाहरण है।

1. प्राप्यावन्तीनुदयनकथा कोविद ग्रामवृद्धान्..... मेघदूतम् डॉ० गंगासहाय प्रेमी, हरीश विश्वविद्यालय प्रकाशन, पूर्वमेघ, श्लोक–31

सम्राट हर्षवर्धन के समय में उदयन कथा लोकप्रियता के पथ पर और अग्रसर हो चुकी थी जिसका उल्लेख **हर्ष** ने अपनी कृति **रत्नावली**[1] में किया है। आचार्य कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में इसका स्पष्ट उल्लेख प्रदान किया है–**'दृष्टा ही जीवितः पुनरावृत्तिर्यथा सयात्रोदयनाभ्याम्।'**

ऐसे अनगिनत प्रमाण मिलते है जो उदयन कथा की प्रसिद्धि का गुणगान करते है। न केवल संस्कृत साहित्य अपितु **पाली साहित्य** भी इसमें सम्मिलित है। **छठी शताब्दी** से पूर्व ही उदयन कथा के प्रमाण प्राप्त होने लगे थे। वस्तुतः इन सभी तथ्यों के आधार पर उदयन कथा को एक महत्वपूर्ण व बहुचर्चित कथा कहना अनुचति न होगा। **भास** की कृति **स्वप्नवासवदत्ता** से तो सभी परिचित होगें परन्तु **अनंगहर्ष कृत तापसवत्सराज** नाटक से बिरले लोग ही परिचित होगें। इस नाटक का आधार भी उदयन वासवदत्ता ही है। तापसवत्सराज की ख्याति बहुत ही विपुल थी। इसकी लोकप्रियता तथा प्रसिद्धि का ज्ञान इससे लग जाता है कि इस नाटक के पद्यों का उद्धरण एवं विषय का समीक्षण अनेकों सुप्रसिद्धि नाटककारों जैसे **मम्मट, कुन्तक, भोजराज, अभिनव गुप्त, हेमचन्द्र, आनन्दवर्धन एवं राजशेखर** जैसे मूर्धन्य वैयाकरणों के द्वारा बड़ी विशदता तथा मार्मिकतो के साथ किया गया है। **आचार्य कुन्तक** ने तो अपनी कृति वक्रोक्तिजीवितम् में तापसवत्सराज नाटक के प्रत्येक अंकगत, वस्तु की समीक्षा पुरवानुपुरव स्वरुप में प्रस्तुत की है। भोजराज जी ने अपने दोनों ग्रन्थों में उद्धरण एवं समीक्षण कार्य बड़ी निपुणता से किया है। यहाँ पर प्रस्तुत समस्त उल्लेख तापसवत्सराज नाटक के **नाट्यसंविधानक** के गौरवधायक है। इसका सर्वाधिक प्राचीनतम् उद्धरण **आचार्य आनन्दवर्धन** ने **ध्वन्यालोक** के तृतीय उद्योत में **उद्घृत** किया गया है।[2]

दुर्भाग्यवश इस नाटक की रचना के विषय में कुछ उपलब्ध नहीं है। फलतः इसकी रचना **नवम् शताब्दी** से प्राचीन होने का अनुमान लगाया जाता है। **तापसवत्सराज** नाटक के प्रणेता **अनंगहर्ष** जी के विषय भी ज्यादा कुछ उपलब्ध नहीं है। प्रस्तावना में ही थोड़ सा निर्दिष्ट है। अनंगहर्ष जी के **पिता** का नाम **नरेन्द्रवर्धन** था, तथा **मातृराज** इनका **उपनाम** था। इन्हें **कलचुरि वंश** में उत्पन्न कोई राजा बताया जाता है। इसके अतिरिक्त कुछ भी निर्दिष्ट नहीं है। **राजशेखर** ने कलचुरि राजवंश में उद्भूत किसी माउराज की प्रशस्त स्तुति भी की है।[3]

1. 'लोके हारि च वत्सराजचरितम् नाट्ये च दक्षा वयम्। रत्नावली, चौखम्भा प्रकाशन, पेज नं०–7।'
2. "उत्कम्पिनी भयपरिरस्खलितांशुकान्ता ते लोचने प्रतिदिशं विधुरे छिपन्ती।
   क्रूरेण दारुणतया सहसैव दग्धा धूमान्धि तेन दहनेन न वीक्षितासि ।।" तापसवत्सराज 2/16
3. मायुराज समो नान्यः कलचुरिः कविः
   उतन्वतः समुत्तस्युः कति वा तुहिनांशवः।।

मालतीमाधव की कामन्दकी के अनुकरण पर इन्होंने **तापसवत्सराज** में **सांकृत्यायनी नामक बौद्ध भिक्षणी** की अवतारणा की है जिससे यह स्पष्ट है कि भवभूति एवं आनन्दवर्धन के समयान्तराल में ही इस नाटक का उदय हुआ होगा।

अनंगहर्ष मातृराज ने वैसे तो 5 कृतियां लिखी ही परन्तु सभी के विषय में प्रमाण उपलब्ध नहीं है। मेरे शोध पत्र का विषय अनंगहर्ष मातृराज का साहित्य में किया गया योगदान है। अनंगहर्ष जी की 4 अन्य कृतियों के विषय कुछ भी ज्ञात व उपलब्ध नहीं है। इनकी **पांचवीं व अन्तिम कृति तापसवत्सराज** को माना जाता है। तापसवत्सराज ग्रन्थ एक नाटक है जो उदयन व वासवदत्ता की प्रणय गाथा पर आधारित है। राजा उदयन वासवदत्ता के अग्नि में जल जाने का समाचार सुनकर नितान्त खिन्न होकर तापस वेश धारण कर प्रयाग में प्राणान्त हेतु तत्पर हो जाते है। अनेक प्रकार की युक्तियों के माध्यम से राजा के प्राणों की रक्षा की जाती है। राजा तापस वेश में सब जगह भ्रमण करते है जहाँ उद्यान में वासवदत्ता राजा को देखकर अत्यन्त दुखी होती है। वह आर्य पुत्र को प्राप्त कष्टों का कारण स्वंय को दोषी मानती है। अन्त में मगध राजकुमारी पद्मावती से राजा का विवाह सम्पन्न होता है।

तापसवत्सराज नाटक का केन्द्र बिन्दु राज स्वयं है। इसकी कथावस्तु अत्यन्त हृदय विदारक एवं वेदनामयी है। काव्यदृष्टि से यह उत्तम व श्रेष्ठ है। जिससे प्रभावित होकर **आचार्य कुन्तक एवं अभिनवगुप्त** ने इसके अनेकों आख्यानों का विश्लेषण अपने ग्रन्थों में प्रस्तुत किया है। उदयन विषय पर आधारित यह तापसवत्सराज पाँचवां ग्रन्थ है, जिसका ज्ञान बहुत कम ही जनों को है। **सुबन्धु विरचित वासवदत्ता** तथा **महाकवि भास**[1] ने दो रुपकों का निर्माण उदयन कथा को आधार बनाकर किया है। वस्तुतः स्वप्नवासवदत्ता को भास की सर्वश्रेष्ठ कृति का श्रेय भी प्राप्त है।

तापसवत्सराज नाटक की भाषा सरल तथा सुबोध है। कथानक प्रस्तुति का कार्य कवि ने उत्तम व श्रेष्ठ ढंग से किया है। भाषा के सरल होने के कारण ही यह रुपक मानव चित्त के ऊपर अपनी अनुपम छाप छोड़ता है। इसमें **शार्दूलविक्रीडित** वृत्तो का बहुल व रुचिर प्रयोग हुआ है। कथा का सम्पूर्ण वृत्तान्त राज उदयन का वासवदत्ता के प्रति अगाध प्रेम व उनके विरह में राजा का करुण क्रन्दन ही है। राजा के दुख में सम्पूर्ण मंत्रीगण दास, दासिया, सेवक, प्रजा सभी राजा को रोता देख स्वयं के आसुओं को नहीं अवरुद्ध कर पा रहे है। राजा का करुण विलाप व रानी वासवदत्ता के प्रति उनके प्रेम को कुछ सुन्दर शब्दों में पिरोने का प्रयत्न किया है।[2]

---

1. वासवदत्ता पं0 श्री शंकरदेव शास्त्री, चौखम्भा विद्या भवन, चौक, बनारस–1
2. तद्वक्त्रेन्दुविलोकनेन दिवसो नीतः प्रदोषस्तथा

   तद्गोष्ठयैव निशाऽपि मन्मथकृतोत्साहैस्तदङ्गार्पणैः।

   तां संप्रत्यपि मार्गदत्तनयनां द्रष्टुं प्रवृत्तस्य मे

   बद्धोत्कण्ठमिदं मनः किमथवा प्रेमाऽसमाप्तोत्सवः ।। तापसवत्सराज (1/4)

ऐसे अनेकों पद्य राजा ने रानी के प्रेम के वशीभूत होकर लिखे है। मातृराज अनंगहर्ष की दूसरी कृति **उदात्तराघव** है जिसकी ख्याति संस्कृत के नाटक साहित्य जगत में व्यापक तथा विपुल है। अपने समय में यह रुपक भी नितान्त लोकप्रिय था। इसकी कथावस्तु **मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र** जी पर आधारित थी। श्रीराम जी के रामायण कालीन घटनाओं में किंचित परिवर्तन कर चित्रित करने का प्रयत्न किया है। रामचन्द्र जी द्वारा छल से बालि का वध करने की कथा का मुख्य रुप से वर्णन है। **दशरुपक** की टीका **अवलोक** में इस बात की पुष्टि की गई है तथा मायुराज की कृति से अनेकों श्लोकों का वर्णन भी उद्घृत किए गए है।

भोजदेव ने **सरस्वती कणठाभरण** मं **(पृ० 642)**[1] तथा **हेमचन्द्र** जी ने **काव्यानुशासन** की स्वोपज्ञ टीका में उदात्तराघव के श्लोकों को उद्घृत किया है। अतः अनंगहर्ष मातृराज जी के साहित्यिक कार्यों का निरुपण इन सभी में प्राप्त होता है। इन सभी वर्णनों से यह तो सिद्ध हो जाता है कि अनंगहर्ष जी अपने समय के श्रेष्ठ नाटककारों में गिने जाते थे। वस्तुतः उनकी उपलब्धियों को सिद्ध कर पाना अत्यन्त कठिन है। कारण उनकी श्रेष्ठता का व साहित्य के प्रति उनके कार्यो को सिद्ध करने के लिए उनकी कृतियां उपलब्ध नहीं है जो इस तथ्य को सिद्ध कर सके।

मायुराज जी के वंश के विषय में कुछ तथ्य **बालरामायण** में प्राप्त होते है। कलचुरि वंश के लोगो का राज्य मध्यदेश में फैला हुआ है। **राजशेखर** ने **बालरामायण** में **(3/35)**[2] इस वंश की राजधानी का उल्लेख माहिष्मती (इन्दौर के पास मान्धाता) में किया गया है–

उपर्युक्त तथ्यों से **उदात्तराघव** के साहित्य जगत में होने का प्रमाण मिलता है साथ ही इसके बहुचर्चित व प्रसिद्ध होने का भी। अनंगहर्ष जी की तुलना यदि महाकवि भास से की जाए तो कदाचित अनुचित न होगा। आधुनिक युग में यदि यह अपनी कृतियों का निर्माण करते तो वह अन्य नाटककारों की भाँति ही प्रसिद्धि प्राप्त करती।

मायुराज जी अपने समय के बहुत प्रसिद्ध कवि थे। यह अत्यन्त सरल स्वभाव के विद्वान थे। इन्हें अपनी विद्वता का लेसमात्र भी घमण्ड नहीं था। यह सभी की सहायता करने अधिक विश्वास करते थे। मायुराज की उपलब्धि इन्हें इनकी कृतियों की श्रेष्ठता के आधार पर प्रदान किया गया था, ऐसा किवंदतियों में प्राप्त होता है। अनंगहर्ष जी ने संस्कृत साहित्य जगत को एक उत्तम व श्रेष्ठ कृति प्रदान की है जिसका जितना आभार व्यक्त किया जाए कम होगा। इन्होंने अपने अनूठे व अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्यो से अन्य विद्वानों को अचरज में डाल दिया था। भास की कृति प्रतिज्ञायौगन्धरायण एवं स्वप्नवासवदत्ता दोनों कृतियों की कथा को एक ही कृति में संजोया है तथा तापसवत्सराज की कथा इन दोनों से सर्वथा भिन्न है।

---

1. भोजदेव कृत सरस्वती कणठाभरण, डॉ0 विश्वनाथ गो0 शास्त्री, (पृ० 642)
2. यन्मेरवला भवति मेकल–शैलकन्या वीतेन्धनो वसति यत्र च चित्रभानुः

   तामेष पाति कृतवीर्ययशोऽवतंसां माहिष्मतीं कलचुरेः कुलराजधा नीम्।। राजशेखर कृत बालरामायण (3/35)

निष्कर्ष स्वरुप में हमें प्राप्त होता है कि अनंगहर्ष जी एक उच्च कोटि के प्रतिभाशाली नाटककार थे। जिन्होने साहित्य जगत को अपनी कृतियों के रुप में अमूल्य निधि प्रदान की है। आज के समय में सर्वाधिक कम लोग ही होंगे जो अनंगहर्ष जी से परिचित होंगे। इसका कारण उनकी कृतियों का विलुप्तप्राय हो जाना है। यदि अन्य नाटककारों के समान अनंगहर्ष जी की कृति भी उपलब्ध होती तो भास से ज्यादा ख्याति व प्रशंसा तापसवत्सराज को प्राप्त होती। इस कथन को बल प्रायः कई कारणों से प्राप्त होता है पहला तो यह कि तापसवत्सराज की घटनाएं व पात्रों के कथन के आधार पर प्रायः स्वप्नवासवदत्ता से भिन्न है। दूसरा एक ही नाटक में सम्पूर्ण कथा का समाहित होना है।

नाटकीय तथ्यों का तापसवत्सराज में पूर्णताः प्रयोग किया गया है। जिसका अभाव स्वप्नवासवदत्ता में दृष्टिगोचर होता है। नाटकीय घटनाएं भी कई अवसरों पर भिन्न भिन्न प्राप्त होती है। यदि किसी कारणवश दोनों नाटकों की तुलना की जाए तो प्रायः तापसवत्सराज को ज्यादा समर्थन प्राप्त होगा। अनंगहर्ष जी ने अपने जीवन को पूर्णतः काव्य व उसके कार्यों के प्रति पूर्णनिष्ठा व समर्पण भाव से न्यौछावर कर दिया था। जब वह किसी कृति का निर्माण करते थे तो स्वंय उसमें पूर्णताः विलीन हो जाते थे।

सन्दर्भ–

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास– आचार्य बलदेव उपाध्याय
2. संस्कृत साहित्य का इतिहास– डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी
3. अनंङ्गहर्षकृत तापसवत्सराज नामक नाटक– डॉ0 देवीदत्त शर्मा
4. भोजदेवकृत सरस्वतीकण्ठाभरण, डॉ0 विश्वनाथ गो0 शास्त्री
5. श्रीराजशेखरप्रणीतं बालरामायणनाम नाटकम् श्रीगोविन्ददेव शास्त्रिणा, संवत् 1926
6. स्वप्नवासवदत्तम् डॉ0 दिनेश प्रसाद तिवारी, महाकाली प्रकाशन
7. मृच्छकटिकम् , डॉ0 श्रीनिवास शास्त्री, साहित्य भण्डार, सुभाष बाजार, मेरठ
8. रत्नावली–नाटिका, पं0 परमेश्वरदीन पाण्डेयः, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी
9. स्वप्नवासवदत्तम्, डॉ0 वासुदेवकृष्ण चतुर्वेदी, महाकाली प्रकाशन, आगरा–2
10. वासवदत्ता पं0 श्री शंकरदेव शास्त्री, चौखम्भा विद्या भवन, चौक, बनारस–1
11. विक्रमोर्वशीयम् पं0 परमेश्वरदीन पाण्डेय, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी